संत कबीर ने लिखा 'देख कबीरा रोया।' (देखकर कबीर रो पड़े)।

वह आत्मा की दुखद कहानी की ओर इशारा कर रहे थे। खरबों वर्षों में एक बार आत्मा को मानव जीवन मिलता है। ईश्वरीय सुख पाने का एक मौका है। लेकिन आत्मा इसे खो देती है। वह गलत दर्शन से निर्देशित हो जातीी है और गंभीर रूप से दंडित हो जाती है। वह सजा इतनी असहनीय होती है कि आत्मा चिखती है, चिल्लाती है, रोती है और पल पल रिहा करने की भीख मांगती है लेकिन कोई सुनने वाला नही होता।

कभी-कभी जीव या आत्मा को गलत धार्मिक विश्वास द्वारा निर्देशित किया जाता है और हत्या सहित अनेक अपराध करता है तथा धार्मिक किताब से कार्यों का समर्थन करता है। ये दोहरा अपराध है। पहला अपराध आपराधिक कृत्य है और दूसरा अपराध है अपराध का दोष धर्म और भगवान को लगाना। उसे फिर दोहरी सजा मिलती है।

कभी-कभी जीव भौतिकवादी दर्शन द्वारा निर्देशित होता है और भौतिक क्षेत्र में वर्चस्व पाने लिए पैसे के पीछे चली जाता है। अपनी शक्ति का गलत और अन्यायपूर्ण तरीकों से इस्तेमाल करता है जिसके कारण दूसरों को अपार कष्ट और पीड़ाओं का सामना करना पडता है। ईश्वर न्याय करता है और अपराधी को नरक के माध्यम से और विभिन्न घटिया निम्न पशु आदि का जीवन देता है जहां अपराधी को जिनके प्रति अपराध किया है उनका भोजन बनना पड सकता है। आप पक्षियों को कीड़े खाते हुए देख सकते हैं, छोटे जानवरों को खाने

वाले बड़े जानवर और कई तरह के दुःख सहन करने पडते है। जानवर अपना दर्द बयाँ भी नहीं कर सकते - बात करने की क्षमता नहीं!

यही कारण है कि संत तुलसीदास कहते हैं कि मानव जीवन नरक पाने के लिए सबसे अच्छा है क्योंकि इस युग में व्यापक रूप से मानव जीवन का दुरुपयोग हो रहा है। शारीरिक सुख की लत की वजह से आध्यात्मिक विषय कोई सुनना भी पसंद नही करता। संत तुलसीदास अन्य प्राप्तव्य भी बताते है जैसे कि स्वर्ग, मुक्ती, दिव्य प्रेम लेकिन वे पहले नरक को सूचीबद्ध करते है क्योंकि इस युग में जादातर लोग अपने कर्मों के कारण नरक की ओर अग्रेसर होते है।

सब कुछ जीव पर निर्भर है। यदि आप अपने आप को पीड़ित की स्थिति में डालेंगे तो आप उस दर्द की मेहसूस करेंगे, जो आपकी कार्रवाई पर ब्रेक लग जाएगा। ईश्वर का न्याय आपको वही पीड़ा में डाल देगा, जो आप दूसरों को दे रहे है। ये तो केवल चोरी का माल वापिस करना हुआ। सजा अलग से भुगतनी पडेगी। ये सब ग्यान यदि आप प्राप्त कर लेते है तो आप निश्चित रूप से इस तरह की कार्रवाई करने से पहले दो बार सोचेंगे।

अपनी बुद्धि को सही दिशा में ले जाएं अन्यथा समझे रहिये - 'विनाश काले विपरित बुद्धी' - 'विनाश प्रतिकूल बुद्धि का परिणाम है'। विनाश से बचे। बुद्धि को ठीक रखे।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132